

सशक्त वपिक्ष की परकिल्पना

यह एडिटोरियल 09/07/2024 को 'हट्टिस्तान टाइम्स' में प्रकाशित [“Friction in Parliament reflects political reality”](#) पर आधारित है। इसमें 18वीं लोकसभा में हुए एक महत्त्वपूर्ण बदलाव पर प्रकाश डाला गया है जहाँ सदन में वपिक्ष अधिक मज़बूत हुआ है और बढ़ती संवीक्षा एवं मुखर वधायी गतशीलता के बीच शष्टिटाचार बनाए रखने की चुनौतियों पर वधिार कया गया है।

प्रलिमिस के लयि:

[संसदीय समति प्रणाली](#), [वपिक्ष के नेता \(LOP\)](#), [संसद](#), [संसदीय वपिक्ष](#), [केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो \(CBI\)](#), [केंद्रीय सतरकता आयुक्त](#), [मुख्य सूचना आयुक्त](#), [राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग](#), [लोकपाल](#), [प्रवरतन नदिशालय \(ED\)](#), [चुनावी बॉण्ड](#)।

मेन्स के लयि:

भारत जैसे लोकतंत्र में संसद के समुचति संचालन के लयि वपिक्ष का महत्त्व।

हाल के वर्षों में एक बदलाव देखने को मला है, जहाँ संसदीय कार्यवाही में सार्थक चर्चाओं के बजाय व्यवधान अधिक हावी हो रहे हैं। कृषकानून जैसे महत्त्वपूर्ण वधियकों पर आरोप लगाया गया कउन्हें उत्साहहीन **वपिक्ष की सार्थक संवीक्षा** के बनिा ही पारति कर दया गया और संसदीय समति प्रणाली की वृहत रूप से उपेक्षा की गई।

एक कमज़ोर वपिक्ष एक कमज़ोर सरकार की तुलना में अधिक जोखमि पैदा करता है, जसिके हानकारक परणाम उत्पन्न हो सकते हैं। एक कमज़ोर वपिक्ष जनता के उस बड़े हसिसे की आवाज़ और मांगों का प्रतनिधित्व करने में वफिल रहता है, जो **सत्तारूढ़ दल का समर्थन** नहीं करती।

[लोकसभा](#) में 234 सदस्यों के साथ एक मज़बूत वपिक्ष और मान्यता प्राप्त [वपिक्ष के नेता \(LoP\)](#) की उपस्थति (जो पद एक दशक से रकित रहा था) ने 18वीं लोकसभा में संसद के स्वरूप एवं कार्यप्रणाली में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन को परलिक्षति कया है।

“लोकतंत्र में वपिक्ष को न केवल संवैधानिक होने के रूप में सहन कया जाता है, बल्कि इसे बनाए भी रखना चाहयि, क्यॉकयिह अपरहार्य है।” ---
वाल्टर व्हपिमैन

‘वपिक्ष का नेता’ क्या है?

- **संसद में वपिक्ष का परचय:**
 - संसदीय वपिक्ष सत्तारूढ़ सरकार को नियंत्रित करने के लयि, वशिष रूप से **वेस्टमसिटर** आधारति **संसदीय प्रणालियों** में, एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक उपस्थति है।
 - ‘आधिकारिक/प्रमुख वपिक्ष’ का दर्जा आमतौर पर सरकार के वपिक्ष में मौजूद सबसे बड़े राजनीतिक दल को प्राप्त होता है, जसिके नेता को ‘वपिक्ष का नेता’ कहा जाता है।
- **वपिक्ष का नेता (Leader of Opposition- LoP)**
 - सदन की कुल सदस्य संख्या की कम से कम 1/10 सीटें रखने वाले सबसे बड़े वपिक्षी दल के नेता को वपिक्ष के नेता का दर्जा दया जाता है।
 - **‘वपिक्ष का नेता’** कोई संवैधानिक पद नहीं है, बल्कयिह एक सांवधिक पद है।
 - वपिक्ष के नेता शब्द को पहली बार संसद द्वारा **‘संसद में वपिक्षी नेता - वेतन और भत्ता अधनियम, 1977’** अधनियम में परभाषति कया गया था।
 - वपिक्ष का नेता [केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो \(CBI\)](#) के नदिशक, [केंद्रीय सतरकता आयुक्त \(CVC\)](#) एवं [मुख्य सूचना आयुक्त \(CIC\)](#), [राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग](#) के अध्यक्ष एवं सदस्य, [मुख्य चुनाव आयुक्त \(CEC\)](#) और अन्य चुनाव आयुक्त और लोकपाल जैसे प्रमुख पदों पर नयिक्त के लयि उचचाधिकार प्राप्त समतियों में वपिक्ष का प्रतनिधि होता है।

यूनाइटेड कगिडम के वेस्टमसिटर मॉडल में वपिक्ष का नेता:

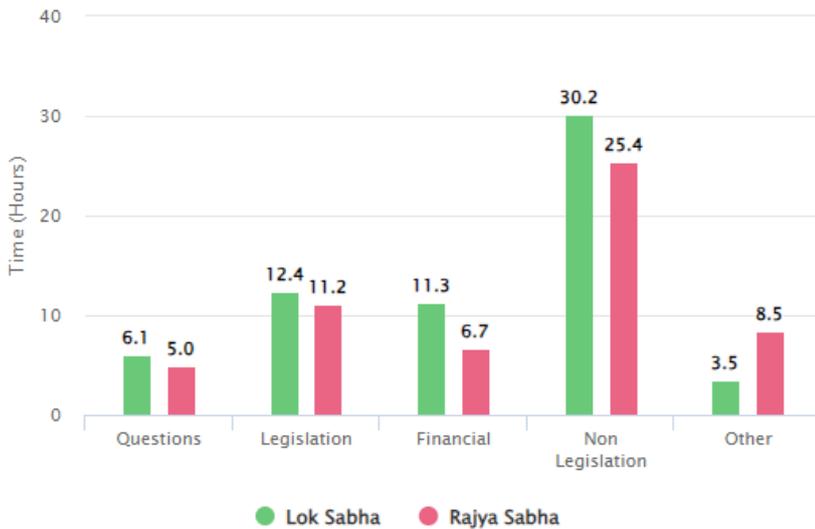
- वेस्टमिस्टर मॉडल में वपिक्ष के नेता को 'प्राइममिनिस्टर-इन-वेटिंग' (Prime Minister-in-waiting) का दर्जा दिया जाता है और वह एक 'शैडो कैबिनेट' (shadow cabinet) का गठन करता है।
- यह शैडो कैबिनेट या छाया मंत्रिमंडल सरकार की नीतियों की आलोचना करता है और वास्तविक मंत्रिमंडल के कार्यों को प्रतबिंबित करते हुए वैकल्पिक रणनीतियाँ प्रस्तुत करता है।
- वपिक्ष के नेता के वभिन्न उत्तरदायित्वों में प्रभावी संसदीय कार्यप्रणाली सुनिश्चित करना, संसदीय चर्चाओं का नेतृत्व करना, सरकार से जवाबदेही की मांग करना और लोकतांत्रिक मानदंडों को बनाए रखना शामिल है।

भारत जैसे लोकतंत्र में वपिक्ष का क्या महत्त्व है?

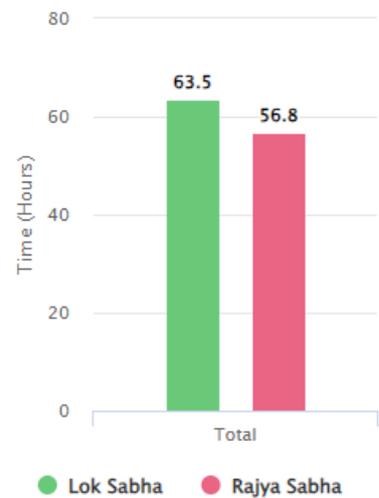
- **वपिक्ष की महत्त्वपूर्ण भूमिका:**
 - एक संरचनात्मक वपिक्ष नविरतमान सरकार की दोषपूर्ण नीतियों और कार्यक्रमों के वरिद्ध जनमत के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभा सकता है।
 - वपिक्ष की प्राथमिक भूमिका में संसद, समितियों, मीडिया और जनता के बीच प्रतदिनि सरकार के कार्यों पर प्रतिक्रिया देना, प्रश्न उठाना और उनकी समीक्षा करना शामिल है।
 - यह सुनिश्चित करता है कि सरकार संवैधानिक मानदंडों का पालन करे और यह सत्तारूढ़ दल द्वारा प्रस्तावित नीतियों एवं कानूनों का आलोचनात्मक परीक्षण करता है।
 - संसद में वपिक्ष न केवल सरकार के कार्यों की आलोचना करता है, बल्कि निरिवाचन क्षेत्र-वशिष्ट आवश्यकताओं की वकालत करने, संशोधन का प्रस्ताव करने और संसदीय प्रक्रियाओं का उपयोग कर आश्वासन की मांग करने में भी भूमिका निभाता है।
- **बेहतर संसदीय कार्यप्रणाली के लिये:**
 - वर्तमान में संसदीय कार्यप्रणाली कई चुनौतियों का सामना कर रही है जो इस प्रकार हैं:
 - **बैठकों की संख्या में कमी:** हाल की लोकसभाओं में बैठक या सत्र के दिनों की संख्या में पूर्व की लोकसभाओं की तुलना में कमी आई है, जहाँ 16वीं और 17वीं लोकसभा में औसतन क्रमशः 66 और 55 दिनी ही ऐसे सत्र आयोजित हुए।
 - **नमिन उत्पादकता: 17वीं लोक सभा** में अधिक सत्रों के आयोजन के बावजूद सदन में वधियी कार्य पर खर्च किये गए घंटों के मामले में उत्पादकता में तेज़ी से गिरावट आई। उदाहरण के लिये, वर्ष 2023 के शीतकालीन सत्र में कुल मिलाकर केवल 62 घंटे कार्य हुआ और वधियकों पर 37 घंटे खर्च हुए, जबकि वर्ष 2019 के बजट सत्र में क्रमशः 281 घंटे और 125 घंटे कार्य हुए थे।
 - **वधियकों को पारित करने में कमी:** 17वीं लोकसभा द्वारा पारित वधियकों की संख्या में इसके 15 सत्रों में क्रमिक गिरावट आई, जहाँ 2019 के बजट सत्र में 35 वधियक पारित किये गए जबकि वर्ष 2023 के बजट सत्र में केवल छह वधियक ही पारित हुए।
 - **चर्चा समय में कमी:** लोकसभा में एक तह्राई से अधिक वधियक एक घंटे से भी कम की चर्चा के साथ पारित हो गए, जो इन वधियकों की सीमति संवीक्षा को उजागर करता है।
 - **संसदीय समितियों की घटती भूमिका:** 17वीं लोकसभा में संसद में प्रस्तुत वधियकों में से केवल 16% को ही वसित्त संवीक्षा के लिये समितियों को भेजा गया, जो पूर्व की लोकसभाओं की तुलना में नमिन प्रतशित को इंगति करता है।
- संसद की बेहतर उत्पादकता सुनिश्चित करने और उपर्युक्त चुनौतियों का समाधान करने में मज़बूत वपिक्ष (संसद में अधिक प्रतनिधित्व के साथ) की समान हसिसेदारी होगी।

//

Time Spent in Different Activities (in hrs)



Functioning of Parliament



वपिक्ष के समक्ष वदियमान प्रमुख चुनौतियाँ:

■ संख्यात्मक अलाभ:

- कई वपिक्षी दलों को सत्तारूढ़ दल या गठबंधन की तुलना में संसद में पर्याप्त संख्याबल की कमी की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।
 - उदाहरण के लिये, **16वीं और 17वीं लोकसभाओं में वपिक्ष के नेता** का पद रक्षित बना रहा क्योंकि कोई भी वपिक्षी दल **कम-से-कम 10% सदस्य** संख्या के मानदंड को पूरा नहीं कर सकी।
- इससे वधियायी परिणामों को प्रभावित करने, समिति की सदस्यता सुरक्षित करने और **सरकारी नीतियों को प्रभावी ढंग से चुनौती** देने की उनकी क्षमता प्रभावित हुई।
- **8वीं लोकसभा में यह परदृश्य बदला हुआ नज़र** आता है लेकिन क्षेत्रीय आकांक्षाओं को व्यक्त कर सकने के लिये संख्या के हिसाब से क्षेत्रीय दलों का प्रतिनिधित्व अभी भी एक मुद्दा है।

■ वखिंडन और वैचारिक विविधता:

- भारत में वपिक्ष वखिंडति और अकुशल तरीके से संगठित रहा है, जिसके कारण संसद के अंदर और बाहर उठाए जा सकने वाले साझा न्यूनतम कार्यक्रम का अभाव है।
- वपिक्षी नेताओं के बीच आंतरिक प्रतिद्वंद्विता और एकजुटता की कमी सत्तारूढ़ दल को चुनौती देने में उनकी सामूहिक प्रभावशीलता को कमजोर कर सकती है।
- इसके अलावा, **भारतीय वपिक्षी दल प्रायः विभिन्न विचारधाराओं, क्षेत्रीय हितों और एजेंडों के कारण वखिंडति** हो जाते हैं, जिससे एकजुट वपिक्षी आख्यान प्रस्तुत करने तथा सरकार के विरुद्ध एकिकृत रणनीतियों का समन्वय करने में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है।

■ प्रतिशोधात्मक राजनीति का प्रचलन:

- यह आरोप लगाया जाता है कि **कानून प्रवर्तन एजेंसियों, नयामक नकियों और चुनावी मशीनरी सहित विभिन्न राज्य संस्थाओं पर सत्तारूढ़ पार्टी का नियंत्रण** वपिक्षी दलों के लिये चुनौतियाँ उत्पन्न करता है।
- इससे पक्षपातपूर्ण प्रवर्तन, चुनावी कदाचार तथा वपिक्षी दलों की गतिविधियों को कमजोर करने के लिये राज्य की शक्ति के दुरुपयोग के आरोप लग सकते हैं।
 - उदाहरण के लिये, राजनीतिक दलों द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में दायर एक याचिका के अनुसार **केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (CBI) और प्रवर्तन नदिशालय (ED) द्वारा जाँच के दायरे में लिये गए लगभग 95% राजनीतिक नेता वपिक्षी दलों के हैं।**

■ वित्तीय एवं संगठनात्मक बाधाएँ:

- वपिक्षी दल, विशेषकर छोटे दल, प्रायः सीमित वित्तीय संसाधनों और संगठनात्मक क्षमता के साथ संघर्षरत होते हैं।
 - उदाहरण के लिये, हाल में आयोजित लोकसभा या राज्य विधानसभा चुनावों में **कम से कम 1% मत हासिल करने वाले राजनीतिक दल चुनावी बॉण्ड** के माध्यम से दान लेने के पात्र थे (हालाँकि इसे हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा असंवैधानिक घोषित कर दिया गया)।
- इससे **ज़मीनी स्तर पर समर्थन जुटाने**, प्रभावी चुनाव अभियान चलाने और पूरे चुनाव चक्र के दौरान राजनीतिक गतिविधियों को बनाए रखने की उनकी क्षमता बाधित होती है।

■ मीडिया और सार्वजनिक मंचों तक सीमित पहुँच:

- सत्तारूढ़ दल को आमतौर पर मुख्यधारा के मीडिया और संचार के लिये सरकार-नियंत्रित प्लेटफॉर्मों तक अधिक पहुँच प्राप्त होती है।
- वपिक्षी दलों को अपने संदेशों का प्रसार करने, सरकार के दावों का प्रतिवाद करने और सार्वजनिक विमर्श में समान दृश्यता प्राप्त करने में चुनौती का सामना करना पड़ सकता है।

■ वधियायी एवं प्रकरियात्मक बाधाएँ:

- **वपिक्षी दलों को प्रायः** संसद में प्रकरियात्मक बाधाओं का सामना करना पड़ता है, जैसे बोलने का सीमित समय, बहस के अवसरों में कमी और वपिक्षी प्रस्तावों को खारज कर दिया जाना।
- इससे विधान की संवीक्षा करने, **संशोधन प्रस्तावित** करने और सरकार को प्रभावी ढंग से जवाबदेह ठहराने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है।

आगे की राह:

- **गठबंधन का नरिमाण:** सामूहिक रूप से संख्यात्मक शक्ति बढ़ाने और सत्तारूढ़ पार्टी या गठबंधन के विरुद्ध एकिकृत मोर्चा बनाने के लिये वपिक्षी दलों द्वारा गठबंधन को मज़बूत करना आम लोगों की चिंताओं की अभिव्यक्ति में मदद कर सकता है।
- **संसदीय नगिरानी को सशक्त बनाना:** वपिक्षी दल संसदीय समितियों, बहसों और वधियायी संवीक्षा में सक्रिय रूप से भाग लेकर संसदीय नगिरानी तंत्र को मज़बूत बना सकते हैं।
- **संगठनात्मक क्षमता में वृद्धि करना:** वे मज़बूत संगठनात्मक संरचनाओं के नरिमाण, आउटरीच क्षमताओं को बढ़ाने और ज़मीनी स्तर पर संपर्क में सुधार पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।
- **समान मीडिया कवरेज:** दूरदर्शन और आकाशवाणी जैसे राज्य स्वामित्व वाले मीडिया चैनलों द्वारा समान कवरेज प्रदान करना।
- **डिजिटल और वैकल्पिक मीडिया का उपयोग:** वपिक्ष के संदेशों को व्यापक रूप से लोगों तक पहुँचाने के लिये डिजिटल प्लेटफॉर्म और वैकल्पिक मीडिया चैनलों का उपयोग किया जा सकता है।
- **जनमत से संलग्नता:** नियमित संवाद, बैठकों और सार्वजनिक परामर्श के माध्यम से जनमत से जुड़ने को प्राथमिकता दी जाए।
- **चुनावी सुधारों की वकालत करना:** चुनावी सुधारों की वकालत की जाए जो चुनावी प्रकरियाँ में पारदर्शिता, निष्पक्षता और न्यायसंगत पहुँच को बढ़ावा देते हैं।
- चुनावों के लिये राज्य द्वारा वित्तपोषण करने जैसे सुधार (जिसकी अनुशंसा इंटरजीव गुप्ता समिति ने की थी) राजनीतिक दलों के लिये समान अवसर उपलब्ध कराएँगे।

अभ्यास प्रश्न: एक मज़बूत वपिक्ष प्रभावी शासन और जवाबदेही में कसि प्रकार योगदान देता है? अपनी संवैधानिक भूमिका नभाने में वपिक्षी दलों के समक्ष वदियमान चुनौतियों पर प्रकाश डालयि और भारतीय राजनीतिक संदर्भ में उनकी प्रभावशीलता को सशक्त करने के उपाय सुझाइये ।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजयि:

1. पहली लोक सभा में वपिक्ष में सबसे बड़ा राजनीतिक दल स्वतंत्र पार्टी था । लोक स
2. भा में "नेता-प्रतपिक्ष" को सर्वप्रथम 1969 में मान्यता दी गई थी ।
3. लोक सभा में यद किंसी दल के न्यूनतम 75 सदस्य न हों तो उसके नेता को नेता-प्रतपिक्ष के रूप में मान्यता नहीं मलि सकती है ।

उपर्युत्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/envisaging-strong-opposition>

